IIJ Impact Factor : 2.206 ISSN - 2395-5104

शब्दार्णव
Shabdarnav

International Peer Reviewed Journal of Multidisciplinary Research

Year-5 Vol. 9, Part-II January-June, 2019

Scientific Research
Educational Research
Technological Research
Literary Research
Behavioral Research

Editor in Chief
DR. RAMKESHWAR TIWARI
Assist. Professor, Shree Baikunth Nath Pawahari Sanskrit Mahavidyalay
Baikunthpur, Deoria

Executive Editors
Dr. Kumar Mritunjay Rakesh
Mr. Raghwendra Pandey

Published by
Samnvay Foundation
Mujaffarpur, Bihar

अनुक्रमणिका

- ऋग्वेद में काव्यात्मक लालित्य 1–4
  डॉ0 देवेश कुमार मिश्र
- स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय किसानों का योगदान (1858–1947) : एक ऐतिहासिक अध्ययन 5–6
  डॉ0 मधु वशिष्ठ
- वैदिक वांङ्मय में ज्योतिष–तत्त्व 7–9
  डॉ0 राघवेन्द्र प्रकाश श्रीवास्तव
- गुप्तों की व्यापारिक विशिष्टता 'एक पुनरावलोकन' 10–14
  डॉ0 प्रियंका सिंह
- भूमंडलीकरण के दौर में हिंदी के विकास में संचार माध्यमों की भूमिका 15–17
  डॉ0 सरोज चक्रधर
- शिशुपालवधम् में नदी–पर्वत 18–21
  घनश्याम यादव
- संस्कृतसाहित्य में बौद्ध परम्परा का योगदान 22–23
  सुखबीर सिंह
- नागार्जुन का जीवन–दर्शन 24–29
  चन्द्रशेखर कुशवाहा
- संस्कृत–वाङ्मय में पर्यावरण 30–33
  डॉ0 अरुण कुमार त्रिपाठी
- उपनिषदों के आधार पर नैतिक मूल्यों का शिक्षा के क्षेत्र में महत्व 34–35
  डॉ0 चन्द्रावती
- गणितीय धर्मशास्त्र में ईश्वर–सृष्टि का बोध 36–43
  डॉ0 नरेन्द्र देव शुक्ला
- 20वीं शताब्दी में डूंगरपुर में शिक्षा का विकास 44–51
  डॉ0 नरेश कुमार पाटीदार
- नरेश मेहता के काव्य में चित्रित प्रकृति एवं सांस्कृतिक बोध 52–56
  डॉ0 राखी उपाध्याय
- महाभारतकालीन अपराध एवं दण्डव्यवस्था 57–63
  डॉ0 संयोगिता
- मीरा के काव्य का लोकपक्ष 64–67
  डॉ0 तारावती मीना
- अभिरुचेः सम्प्रत्यात्मकमध्ययनम् 68–71
  (A Conceptual Study of Predilection)
  डॉ0 देवेन्द्र कुमार मिश्रः

संस्कृतसाहित्य में बौद्ध परम्परा का योगदान

सुखबीर सिंह*

संस्कृतसाहित्य की ज्ञानगंगा वैदिक काल से लेकर आज तक मानववृन्द के मानसिक सम्प्रत्ययों का परिष्कार व परिवर्धन करती हुयी, विविध आयामों व नवाचारों से सम्बल प्राप्त करती हुयी अजस्त्र बह रही है।

यदि यह माने संस्कृत कोई भाषा विशेष न होकर एक जीवन शैली है अथवा मानव सभ्यता का श्रेष्ठतम निदर्शन है तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

संस्कृत साहित्य सच्चे अर्थों में अप्रतिम व आलौकिक है। विश्व की किसी भी अन्य भाषा में वह क्षमता नहीं जो संस्कृत साहित्य की विपुलता, महानता का अनुगमन कर सके। अतः निश्चप्रचं यह कहा जा सकता है कि इस दिव्यभाषा में उपनिबद्ध साहित्य वैश्विक वाङ्मय का आधारभूतस्तम्भ व ज्ञानकोष है।

किंतु उपर्युक्त कथनों से यह जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि इस साहित्य में ऐसे कौन–कौन से दिव्यगुण समाहित है जिनके कारण यह भाषा एवम् इसका साहित्य दूसरी भाषाओं के साहित्य के लिये उपजीव्यता धारण करता है।

संस्कृतवाङ्मय के कोटिशः ग्रथरत्न इसके वैभव को सूचित करते है। यद्यपि वैदिक ग्रंथ दर्शन ग्रंथ इत्यादि संस्कृत साहित्य के वैभव को द्विगुणित करते है तथापि बौद्धसाहित्य एवम् बौद्धसाहित्य परम्परा का संस्कृत साहित्य में विशेष योगदान है। "The light of Asia" भगवान गौतमबुद्ध एवम् उनके चरित्र, सिद्धांतों पर आधारित साहित्य बौद्धसाहित्य कहलाता है। यद्यपि महात्मा गौतमबुद्ध ने अपने उपदेश पालि पाकृत भाषाओं में दिये थे तथापि संस्कृत भाषा में भी बौद्धसाहित्य प्रचुर मात्रा में रचा गया।

हाँ यह भी स्वीकार्य तथ्य है कि इस साहित्य की संस्कृत भाषा कुछ विलक्षण है एवम् पालि प्राकृतादि भाषाओं से सम्पृक्त है अतः इसके मिश्र संस्कृत के नाम से अभिहित किया जाता है।

इस संस्कृत भाषा का श्रेष्ठ रत्न है अवदान साहित्य। अवदान साहित्य संस्कृतसाहित्य के लिए उपहार स्वरूप है। वास्तव में पांशुप्रदानावदान में लिखी हुयी यह पक्तियां भगवान गौतमबुद्ध के जीवन को परिभाषित सी करती हुयी प्रतीत होती है।

योऽसौ स्वमांसतनुभिर्यजनानि कृत्वा–तप्यच् चिरं करन्णया जगता हिताय
तस्य श्रमस्य सफलीकरणाय सन्तः सावर्जितं श्रृणुत सांप्रतभष्यमाणं।।

अवदान साहित्य मानवबुद्धि के परिष्कार, ज्ञानवर्धन एवम् शान्तिभावना की समृद्धि के लिए आवश्यक सोपान है। इसके अतिरिक्त अवदान साहित्य का ऐतिहासिक महत्व भी भारतीय राजवंशो को स्थापित करता है। अवदान साहित्य में सम्राट अशोक, कुणाल, सम्पदि एवम् अन्य नृपों का वर्णन प्राप्त होता है। तद्यथा–

त्यागशूरों नरेन्द्रोऽसौ अशोको मोर्यकुन्जरः। जम्बुद्वीपेश्वरो भूत्वा जातेऽर्धामलेकश्वरः।।
भृत्यैः स भूमिपतिरद्य हताधिकारो, दानं प्रयच्छति किलामलकार्धमेतत
श्रीभोगविस्तरमदैरतिगर्वितानां, प्रत्यादिशन्वि मनांसि पृथग्जनानां।[1]

मानव व्यवहार के लिए भी आवश्यक तत्वों का वर्णन प्राप्त होता है:–

अप्रमादेन सम्पाद्य राजैश्वर्यं प्रवर्ततां। दुलर्भत्रीणि रत्नानि नित्यं पूजय पार्थिव[2]

अशोकावदान मानवीय शरीर यदि वह गुणहीन है और मृत है तो उसका मूल्य पशुओं के शरीरों से भी ज्यादा गर्हीत है:–

गोगर्दभोरभ्रमृगद्विजानां मूल्यैगृहीतानि शिरांसि पुम्भिः।
शिरस्त्विदं मानुशमप्रशस्तं न गृह्यते मूल्यमृतेऽपि राजन्[3]।।

*सहायक आचार्य, राजीव गांधी राजकीय महाविद्यालय, साहा–अंबाला

अतः स्पष्टरूप से यह कहा जा सकता है कि अवदान साहित्य का साहित्यिक, राजनैतिक, व्यवहारिक महत्व है तथा संस्कृत साहित्य परंपरा में कुछ विलक्षण शैली में रचित यह बौद्धसाहित्य है क्योंकि–**गद्यपद्यमयं काव्यं चम्पूरीत्यभिधीयते।**[4]

इसी प्रकार से कुछ काव्य शास्त्रज्ञ कालिदास जो कि विश्व के महानतम महाकवि है उनके दीपशिखा होने के लिए अश्वघोष बौद्धमहाकवि को कारणरूप में स्वीकार करते है। अतः स्पष्ट रूप से कह सकते हैं कि वैदिकोत्तरर्ती संस्कृत साहित्य आवश्यक रूप से बौद्धकाव्य परम्परा का ऋणी है।

न केवल पद्यसाहित्य अपितु **गद्यं कवीनां निकशं वदन्ति** इस आभणक के अनुसार गद्यशिरोमणि बाणभट्ट जिनके लिये **बाणाच्छिष्टं जगत् सर्वम्** उक्ति प्रसिद्ध है उन्होंने भी अपने आश्रयदाता हर्षवर्धन जिनका बौद्धधर्मानुराग सर्वथा प्रसिद्ध है उन पर भी बौद्धसाहित्य की वैचारिक प्रवृत्ति का बाहुल्य दृग्गोचर होता है।

संस्कृत वाङ्मय की यह प्रवृति जो कि बौद्धसाहित्यानुप्रणित है के आधुनिक समय में भी नूतनग्रन्थरत्न महाबोधिद्रुमविजयम विजयपर्व कुणालस्य कुलीनता, अशोकस्य पराजयः इस परम्परा को आत्मसात करके संजीवनी प्रदान करते हैं। संक्षेपतः इन ग्रन्थरत्नों का विवरण निम्नवत् हैः–

महाबोधिद्रुमविजयम्– आचार्य प्रवर डॉ0 प्रफुल्ल गडपाल द्वारा विचरित खण्डकाव्य है। साहित्यदर्पणकार के मतानुसारः– **खण्डकाव्यं भवेत् काव्यस्येकदेशानुसारि च।**

आधुनिक संस्कृतबौद्धकाव्य परम्परा का समुन्नत निदर्शन है प्रस्तुत खण्डकाव्य में बौद्धकाव्य में बौद्धगया स्थान पर स्थित महाबोधि वृक्ष की स्तुति कविश्रेष्ठ ने प्रांजल, प्रसादगुणोपेत शैली में शांतरस सुगुम्फित की है। उदाहरणार्थ कुछ श्लोक द्रष्टव्य है–

बुद्धं नमामि सर्वज्ञं भुभां बुद्धपरम्पराम्, महाबोधिद्रुमं दिव्यं गयाभूमि महत्तराम।।

एवम्

धर्मं धर्माकरं नत्वा महाबोधितरूं तथा वज्रासनं महाभक्त्या प्रणिपत्याभिवादये[5]**।।**

इस खण्डकाव्य में महाबोधिद्रुम के व्याज से महाकवि ने ऐतिहासिक तथ्यों का सुगुम्फन किया है।

विजयपर्व पदमभूषण डॉ0 रामकुमार वर्मा द्वारा विरचित एवं डॉ0 मिश्रोऽभिराज राजेंद्र द्वारा अनूदित नाटक है। कवि ने अनुवाद करते हुये भी नाटक में नाटकत्व के गुणों का सुगुम्फन किया है। यद्यपि यह नाटक सम्राट अशोकाश्रित है तथापि प्रसंगवशात् सम्राट अशोक के जीवन चरित विषयक नाना तत्वों का परिचय प्राप्त होता है तथा बोद्ध धर्म की महत्वातिशायिनी महिमा स्थापित होती है।

इसके अतिरिक्त राम जी उपाध्याय द्वारा विरचित अशोक विजयम नाटक भी इसी भावना को मौलिक उद्भावनाओं के साथ व्यक्त करता है तद्यथा–

त्यक्ते युद्धजयेऽस्तु धर्मविजयो लोकस्य शांतिप्रदः
सेना सद्व्रतिनां सुशीलमहसां धर्माध्वसंबोधिनाम्[6]**।।**

इसी शृंखला में श्री नारायण कांकर शास्त्री द्वारा विरचित अशोकस्य पराजयः एवम् कुणालस्य कुलीनता एकाकियां भी बौद्धकाव्य परम्परा में आधुनिक श्रेणी की श्री वृद्धि करती हुयी प्रतीत होती है।

वस्तुतस्तु बौद्धसाहित्य संस्कृतसाहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है और संस्कृत साहित्य इस साहित्य परम्परा के बिना उतने प्रकर्ष से साहित्यान्तरिक्ष में सुशोभित नहीं हो सकता। अतः यह साहित्य श्रीवृद्धि अविरामोपक्रम से होनी चाहिए।

सन्दर्भ :

1. अशोकावदानं, पृ0 131
2. अशोकावदानं
3. वही
4. षष्ठपरिच्छेद साहित्यदर्पण
5. महावोधिद्रुमविजयम
6. अशोकविजयमं, पृ0 29